वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के शैक्षणिक विस्तार कार्यक्रम को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के अनुरोध पर वानिकी स्नातकोत्तर के 33 छात्र-छात्राओं के लिए दस दिवसीय सांस्थानिक शिक्षण प्रशिक्षण सशुल्क कार्यक्रम का आरम्भ वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी के स्वागत उद्बोधन के साथ किया गया। डा. कुलकर्णी ने विद्यार्थियों को बताया कि संस्थान के वैज्ञानिक तथा तकनीकी अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों के लाभ के लिए कार्यक्रम अनुसूची तैयार की गई है एवं वानिकी के लगभग सभी क्षेत्रों को सम्मलित किया गया है। यह संस्थान गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के लिए संकल्पित है। अतः सभी अपनी जिज्ञासा के अनुसार प्रशिक्षण के सुधार हेतु अनुशासन के दायरे में रहकर सक्षम अधिकारी से संपर्क कर सकते है। उन्होनें यह भी कह कि आपसी चर्चा (Interaction) से प्रशिक्षण का भरपूर लाभ प्राप्त होगा। निदेसक महोदय ने आशा वयक्त की यह प्रशिक्षण फलदायी होगा एवं शैक्षणिक आवश्यकता को पूरा करेगा।

संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) सह पाठ्यक्रम निदेशक, डा. योगेश्वर मिश्रा ने सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम की पृष्ठभूमी प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागियों का परिचय एवं उनकी रूचि की समीक्षा की एवं प्रशिक्षण का विषय प्रस्तुत करते हुए आवश्यक सुधार हेतु अपनी राय देने का आग्रह किया।

18.04.2022 से 28.04.2022 तक जारी इस प्रशिक्षण में डा. योगेश्वर मिश्रा, वैज्ञानिक-जी के द्वारा संस्थान के गतिविधियों के साथ-साथ परिषद के क्रिया-कलापों को विस्तार से बताया। वानिकी वृक्ष प्रजाति के बीजों का उत्पादन क्षेत्र, संग्रहण तकनीक, बीज प्रसंस्करण एवं वानिकी के लिए बीज का चयन एवं उपचार के महत्व को विस्तार से बताया।

डा. शरद तिवरी, वैज्ञानिक-जी ने GIS के उपयोग एवं वानिकी में Remote Sensing विस्तार से बताते हुए सूचना तकनीक प्रयोगशाला की गतिविधियों को भी बताया एवं वानिकी में सूचना तकनीकी के महत्व को समझाया।

डा. अनिमेष सिन्हा, वैज्ञानिक – एफ ने पौधों के उत्तक संवर्धन सिद्धांत एवं संतति जांच प्रक्रिया को विस्तार से बताया एवं श्री अतनु सरकार ने के साथ उत्तक संवर्धन प्रयोगशाला की गतिविधियों को बताया।

श्री संजीव कुमार, वैज्ञानिक-ई ने संस्थान द्वारा संचालित पौध भंडार विकास कार्यक्रम को विस्तार से समझाते हुए पलास वृक्षों का चयन संबंधी सारी पहलुओं को बताया।

डा. आदित्य कुमार, वैज्ञानिक-डी के सहयोगी श्री मालाकार ने वानिकी प्रजातियों के मूल्यांकन में आण्विक मार्कर की भूमिका को विस्तार से बताया।

डा.एस.एन.मिश्रा, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने GIS सिद्धांत के द्वारा मृदा नमूना जांच एवं पोषक तत्वों के विश्लेषण को बताते हुए श्री सतीश कुमार, तकनीकी अधिकारी के सहयोग से मृदा प्रयोगशाला के गतिविधियों को बताया।

श्री सुभाष चंद्र, वैज्ञानिक-डी ने वानिकी में कीट प्रबंधन के विषय में विस्तार से बताया। लाभदायक एवं हानिकारक कीटों की चर्चा करते हुए कीट भक्षी को दिखाया एवं इनसे वन सुरक्षा के मूलभूत आवश्यकताओं को बताया।

श्री एस.एन.वैद्य, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं श्री बी.डी.पंडित, तकनीकी अधिकारी ने लाह उत्पादन, उपयोग एवं लाह आधारित कुटीर उद्योग के विषय में बताया। विद्यार्थियों को लाह पोषक वृक्ष, लाह कीट एवं उनके प्रबंधन का क्षेत्रीय प्रशिक्षण श्री बी.डी.पंडित ने दिया जिसमे श्री श्री सूरज कुमार ने सहयोग किया।

श्री रवि शंकर प्रसाद ने बांस एवं अन्य वृक्ष प्रजातियों के पहचान, उपयोग एवं महत्व को विस्तार से समझाया। उन्होनें श्री महेश कुमार, तकनीकी सहायक के सहयोग बांस वाटिका, पौधशाला एवं बांस प्रवर्धन के तकनीक को समझाते हुए बीज एवं कटिंग द्वारा पौधा तैयार करने एवं हरित गृह तथा धुंध गृह की आवश्यकता आदि को बताया। श्री बी.डी.पंडित के नेतृत्व में मांडर का भ्रमण किया गया जहां श्री पवन कुमार एवं श्री प्रशांत कुमार बांस रोपित पौधों के बढ़वार प्रदर्शन को दिखाया एवं उनके कारणों को समझाया| बीज द्वारा तैयार पौधों तथा कटिंग से तैयार पौधों के अंतर को समझाते हुए बेहतर विकल्प एवं तकनीक अपनाने की सलाह दी। जैविक खाद निर्माण, बांस पौध भंडार, हरित गृह, धुंध कक्ष आदि का भ्रमण कराते हुए आवश्यक तकनीकी जानकारी दी गई। 28.04.2022 को अपराह्न समापन समारोह में सुश्री पूर्वी जैन, सुश्री कार्णिका वर्मा, श्री वत्स सिंह एवं श्री आलोक साहनी ने अपनी बात रखते हुए संस्थान के द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण के गुणवत्ता की सराहना की।

डा. योगेश्वर मिश्रा ने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के साथ भविष्य में शैक्षणिक समझौता ज्ञापन पर सहमति होने की संभावना व्यक्त की एवं पी.एच.डी. प्राप्त करने हेतु संस्थान का सहयोग का आश्वासन दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिकों के सहयोग से समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा ने प्रमाण पत्र वितरण किया एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।